मैं क्यों लिखता हूँ? (अज्ञेय)

पाठ का सारांश

'मैं क्यों लिखता हूँ?' अज्ञेय द्वारा रचित एक निबंध है। इसमें शीर्षक के अनुरूप निबंधकार ने लेखन के कारणों को व्यक्त किया है।

लिखने के बहुत-से कारण–मैं क्यों लिखता हूँ, यह प्रश्न बड़ा सरल दिखाई देता है, किंतु है बड़ा कठिन। इस प्रश्न का उत्तर लेखक के व्यक्तिगत जीवन के स्तरों से जुड़ा हुआ है। इन सभी को तो कलम से बाँधा नहीं जा सकता, इनमें से कुछ को चुनना होता है। लेखक स्वयं इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए उत्सुक है। निबंधकार के अनुसार एक उत्तर तो यह है कि मैं इसीलिए लिखता हूँ कि स्वयं **जानना चाहता हूँ कि क्यों लिखता हूँ**–लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। लिखकर ही लेखक अपने अंदर की विवशता को पहचानता है। कुछ लोग संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाज़े से, आर्थिक आवश्यकता के कारण भी लिखते हैं। कुछ लोग भीतरी विवशता से भी लिखते हैं।

लेखक की भीतरी विवशता लिखने की प्रेरणा का स्रोत–यह भीतरी विवशता क्या होती है, इसे बताना बड़ा कठिन है। इसे बताने के लिए निबंधकार अपनी एक कविता की चर्चा करते हैं। लेखक विज्ञान के विद्यार्थी रहे। अणु क्या होता है? इसके बारे में पढ़ा। अणु का भेदन कैसे संभव हुआ? रेडियोधर्मिता के क्या प्रभाव होते हैं? इन सबका पुस्तकीय-सैद्धांतिक ज्ञान लेखक ने प्राप्त किया। हिरोशिमा पर जब परमाणु बम गिराया गया तो उसके समाचार अखबार में पढ़े। विज्ञान के इस दुरुपयोग के प्रति बुद्धि का विद्रोह स्वाभाविक था। लेखक ने इस विषय पर लेख तो लिखा, लेकिन कविता नहीं लिखी।

अनुभूति लेखन का मुख्य कारण–लेखक को जापान जाने का अवसर मिला। लेखक हिरोशिमा भी गया और वह अस्पताल भी देखा, जहाँ रेडियो-पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट झेल रहे हैं। इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव भी हुआ और अनुभूति भी। अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है, कम-से-कम कृतिकार के लिए। अनुभव तो घटित का होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है, जो वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ है। हिरोशिमा में सब देखकर भी तत्काल कुछ नहीं लिखा। एक दिन हिरोशिमा में सड़क पर घूमते हुए देखा–एक जले हुए पत्थर पर एक आदमी की छाया है। रेडियोधर्मी पदार्थ ने आदमी को तो भाप बनाकर उड़ा दिया, केवल पत्थर पर उसकी आकृति भर रह गई। इस प्रकार संपूर्ण घटना जैसे पत्थर पर लिख गई।

'हिरोशिमा' कविता अज्ञेय की अनुभूति का सच–पत्थर पर छपी उस छाया को देखकर लेखक अवाक् रह गया। एक प्रकार से वह स्वयं हिरोशिमा के विस्फ़ोट का साक्षी बन गया। इसी में से रचना करने की विवशता जाग्रत हुई और अचानक एक दिन लेखक ने हिरोशिमा पर कविता लिख डाली, जापान में नहीं, भारत लौटकर रेलगाड़ी में। यह कविता लेखक की अनुभूति का सच है।

शब्दार्थ

सरल = आसान। **स्पर्श करना** = छूना। **आभ्यंतर** = भीतर का। **उन्मेष** = प्रकाश, दीप्त। **निमित्त** = कारण। **कृतिकार** = रचनाकार। **विवशता** = मजबूरी। **बखानना** = व्यक्त करना। **परवर्ती** = बाद के। **युद्ध-काल** = युद्ध का समय। **प्रत्यक्ष** = आँखों के सामने। **रूद्ध** = बंद होना। **अवाक्** = बिना वाणी के, चुपचाप। **प्रसूत** = उत्पन्न।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए*–

प्रश्न 1 : लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?

उत्तर : लेखक के अनुसार अनुभव तो घटित होता है, परंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है, जो वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं होता, मगर अनुभूति में वह प्रत्यक्ष हो जाता है।

प्रश्न 2 : लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फ़ोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर : हिरोशिमा में एक सड़क पर घूमते हुए अणु विस्फ़ोट से काले हुए पत्थर पर छपी हुई एक मानवाकृति को देखकर लेखक को एक थप्पड़-सा लगा। लेखक अवाक् रह गया और स्वयं को विस्फ़ोट का भोक्ता अनुभव करने लगा।

प्रश्न 3 : 'मैं क्यों लिखता हूँ?' के आधार पर बताइए–
(क) लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं?
(ख) किसी रचनाकार के प्रेरणास्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

उत्तर : (क) लेखक को ख्याति की इच्छा, संपादकों का आग्रह, प्रकाशक के तकाजे और आर्थिक आवश्यकता लिखने के लिए प्रेरित करती है।

(ख) किसी रचनाकार का प्रेरणास्रोत लेखक का भीतरी उन्मेष बन जाता है और वह रचना करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

प्रश्न 4 : कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौन-से हो सकते हैं?

उत्तर : ये बाह्य दबाव निम्नलिखित हो सकते हैं–
(i) किसी का आग्रह।
(ii) आर्थिक विवशताएँ।
(iii) प्रसिद्धि पाने की इच्छा।
(iv) कोई विशिष्ट घटना, जो अचानक घटी हो।

प्रश्न 5 : क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

उत्तर : बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि ये अन्य क्षेत्रों; जैसे–पत्रकार, वैज्ञानिक, खिलाड़ी, चित्रकार, कवि, शिल्पकार, वास्तुविद् आदि को भी प्रभावित करते हैं। इनमें ख्याति प्राप्त करने का दबाव सर्वाधिक दिखाई देता है।

प्रश्न 6 : हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबावों का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर : निबंधकार को जापान जाने का अवसर मिला, तब वह हिरोशिमा भी गया और वह अस्पताल भी देखा, जहाँ रेडियोधर्मी-पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट उठा रहे थे। इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव भी हुआ–पर अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है, कम-से-कम कृतिकार के लिए। अनुभव तो घटित का होता है, परंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है, जो वास्तव

में कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ है। जो आँखों के सामने नहीं आया, जो घटित के अनुभव में नहीं आया, वही आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है, तब वह अनुभूति-प्रत्यक्ष हो जाता है। हिरोशिमा में सबकुछ देखकर भी निबंधकार ने तत्काल कुछ लिखा नहीं; क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष की अनुभूति की कमी थी। फिर एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है–विस्फ़ोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फ़ोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध हो गई होंगी–जो आस-पास से आगे बढ़ गईं, उन्होंने पत्थर को झुलसा दिया, जो उस व्यक्ति पर अटकीं, उन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची दुःखद घटना जैसे पत्थर पर लिखी गई। पत्थर पर बनी व्यक्ति की छाया ने लेखक को हिरोशिमा विस्फ़ोट की प्रत्यक्ष अनुभूति करा दी।

निबंधकार ने इस दृश्य का वर्णन करते हुए लिखा है–"उस छाया को देखकर जैसे एक थप्पड़-सा लगा। अवाक् इतिहास जैसे भीतर कहीं सहसा एक जलते हुए सूर्य-सा उग आया और डूब गया। मैं कहूँ कि उस क्षण में अणु-विस्फ़ोट मेरे अनुभूति-प्रत्यक्ष में आ गया–एक अर्थ में मैं स्वयं हिरोशिमा के विस्फ़ोट का भोक्ता बन गया।

इसी में से वह विवशता जागी। भीतर की आकुलता बुद्धि के क्षेत्र से बढ़कर संवेदना के क्षेत्र में आ गई·····फिर धीरे-धीरे मैं उससे अपने को अलग कर सका और अचानक एक दिन मैंने हिरोशिमा पर कविता लिखी–जापान में नहीं, भारत लौटकर, रेलगाड़ी में बैठे-बैठे।"

यह कविता अच्छी है या बुरी; इससे मुझे मतलब नहीं है। मेरे निकट वह सच है, जो मैंने देखा है, यही मेरे निकट महत्त्व की बात है। स्पष्ट है–हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबावों का परिणाम है।

प्रश्न 7 : हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

अथवा* 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि आपके विचार से विज्ञान का दुरुपयोग कैसे हो रहा है और उससे कैसे बचा जा सकता है?** ***(CBSE 2023)

उत्तर: विज्ञान ने मानव को वरदायिनी शक्तियाँ प्रदान की हैं तथा मानव के कठिन जीवन को सरल बना दिया है। उसने मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं तथा उसे बाढ़, अकाल और महामारी से बचाया है। इसके अतिरिक्त मनुष्य को नीरोग बनाने में सहायता करके उसे दीर्घायु बनाया है, रहन-सहन संबंधी सुविधाएँ प्रदान करके उसके जीवन को सुखमय किया है तथा अपराधों को कम करने में भी सहायता की है। अब तो 'लाई डिटेक्टर' मशीन की सहायता से व्यक्ति के अपराध का पता लगाना और भी अधिक सरल हो गया है।

जहाँ विज्ञान ने मनुष्य को अनेक दृष्टियों से लाभांवित किया है, वहीं उसे भयंकर हानियाँ भी पहुँचाई गई हैं। वैज्ञानिक उपकरणों ने मनुष्य को कामचोर बना दिया है। यंत्रों के अत्यधिक उपयोग ने देश में बेकारी को जन्म दिया है। नवीन प्रयोगों ने वातावरण को दूषित कर दिया है। परमाणु-परीक्षणों ने मानव को भयाक्रांत कर दिया है। जापान के नागासाकी और हिरोशिमा नगरों का विनाश विज्ञान की ही देन है। मनुष्य अपनी पुरानी परंपराएँ और आस्थाएँ भूलकर भौतिकवादी होता जा रहा है। वह स्वार्थी हो रहा है तथा उसमें विश्वबंधुत्व की भावना लुप्त हो रही है। वैज्ञानिक आविष्कारों की निरंतर स्पर्धा आज विश्व को खतरनाक मोड़ पर ले जा रही है। परमाणु तथा हाइड्रोजन बम निःसंदेह विश्व-शांति के लिए खतरा बन गए हैं। इनके प्रयोग से किसी भी क्षण संपूर्ण विश्व और उसकी संस्कृति पलभर में नष्ट हो सकती है। विवेक, धैर्य और सहिष्णुता से मानव-कल्याण के लिए विज्ञान का प्रयोग करके ही उसके दुरुपयोग से बचा जा सकता है।

प्रश्न 8 : एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर: एक संवेदनशील युवा नागरिक होने के नाते विज्ञान का दुरुपयोग रोकने के उपाय करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। इसके लिए हम लोगों को जनसंचार के माध्यमों, नुक्कड़ नाटकों, परिचर्चाओं, निबंध प्रतियोगिताओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा जन जागरूकता आंदोलनों के माध्यम से यह समझाएँगे कि विज्ञान के द्वारा किए गए सभी आविष्कारों का उद्देश्य प्राणिमात्र का कल्याण करना था, न कि दूसरों को हानि पहुँचाकर अपने स्वार्थ सिद्ध करना। उदाहरण के लिए चाकू का आविष्कार सब्ज़ी आदि काटने के लिए हुआ, किसी मनुष्य की गर्दन काटने के लिए नहीं; इसी प्रकार आग की खोज भोजन पकाने के लिए हुई, न कि किसी का घर जलाने के लिए; अतः हमें विज्ञान और उसके अनुसंधानों के उपयोग में विवेक, धैर्य और सहिष्णुता को सर्वोपरि रखना चाहिए। अन्यथा उसके आविष्कार और अनुसंधान हमारे लिए वरदान नहीं, बल्कि अभिशाप सिद्ध होंगे।

प्रश्न 9 : मैं क्यों लिखता हूँ? का लेखक ने क्या उत्तर दिया? ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर: लेखक इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देता है–"एक उत्तर तो यह है कि मैं इसीलिए लिखता हूँ कि स्वयं जानना चाहता हूँ कि क्यों लिखता हूँ-लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। वास्तव में सच्चा उत्तर यही है। लिखकर ही लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है, जिसके कारण उसने लिखा–और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो जाता है। मैं भी उस आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए, तटस्थ होकर उसे देखने और पहचान लेने के लिए लिखता हूँ। मेरा विश्वास है कि सभी कृतिकार–क्योंकि सभी लेखक कृतिकार नहीं होते; न उनका सब लेखन ही कृति होता है–सभी कृतिकार इसीलिए लिखते हैं। यह ठीक है कि कुछ ख्याति मिल जाने के बाद कुछ बाहर की विवशता से भी लिखा जाता है–संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजे से, आर्थिक आवश्यकता से'। परंतु एक तो कृतिकार हमेशा अपने सम्मुख ईमानदारी से यह भेद बनाए रखता है कि कौन-सी कृति भीतरी प्रेरणा का फल है, कौन-सा लेखन बाहरी दबाव का, दूसरा यह भी होता है कि बाहर का दबाव वास्तव में दबाव नहीं रहता, वह मानो भीतरी उन्मेष का निमित्त बन जाता है।"

प्रश्न 10 : अज्ञेय जी ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंकने और हिरोशिमा के विस्फ़ोट में कौन-सी समानता देखते हैं?

उत्तर : अज्ञेय जी ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंकने और हिरोशिमा के विस्फ़ोट में एक साम्य देखते हैं। उन्होंने देखा था कि जब सैनिकों को मछलियों की आवश्यकता होती थी तो वे ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंककर हज़ारों मछलियों को व्यर्थ में मार डालते थे। यह उन मछलियों का सरासर अपव्यय था। इसी प्रकार हिरोशिमा में अपने अहं की पूर्ति के लिए व्यर्थ ही परमाणु विस्फ़ोट के द्वारा मनुष्यों को मार डाला गया था।

अज्ञेय जी को दोनों की घटनाएँ व्यर्थ जीव-नाश लगती हैं।

प्रश्न 11 : लेखक लिखकर स्वयं को कैसे जान पाता है?

उत्तर : लेखक अपनी भीतरी विवशता और प्रेरणा को लिखकर प्रकट करता है। यदि वह नहीं लिखता तो कैसे जान पाता कि उसके मन को किस बात ने लिखने के लिए विवश किया था। लिखने के बाद वह अपने आंतरिक दबाव से स्वयं को मुक्त पाता है।

प्रश्न 12 : लेखक और कृतिकार का अंतर स्पष्ट करें। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : अज्ञेय जी के अनुसार कुछ भी लिखना लेखन नहीं कहला सकता। उन्होंने लेखक और कृतिकार में अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि सच्चा लेखन वह होता है जो आंतरिक दबाव से उपजे मन की

छटपटाहट को मुक्त करने के लिए उसे कागज़ पर उतारते चले जाएँ। ऐसा लेखन ही "कृति" बन जाता है और लेखक कृतिकार कहलाता है। लेखक जब धन एवं यश की कामना से लिखता है, तो वह सामान्य लेखन कहलाता है।

प्रश्न 13 : प्रत्यक्ष अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : अज्ञेय जी ने प्रत्यक्ष और अनुभूति में अंतर स्पष्ट करते हुए बताया है कि प्रत्यक्ष अनुभव सामने घटी वास्तविक घटना का होता है। यह घटना देखने वाले के मन में गहरी अनुभूति जगाए यह आवश्यक नहीं है अनुभूति आंतरिक होती हैं। लेखक के अनुसार जब किसी के मन में संवेदना और कल्पना के माध्यम से कोई घटना जब प्रत्यक्ष रूप से साकार हो उठती है, तो उसे अनुभूति कहते हैं। अनुभूति से ही लिखने की प्रेरणा जागती है।

प्रश्न 14 : 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ के आधार पर बताइए कि हिरोशिमा प्रवास का लेखक के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : हिरोशिमा प्रवास का लेखक के हृदय पर यह प्रभाव पड़ा कि जिस अणु-बम की घटना को उन्होंने प्रत्यक्ष घटित होते नहीं देखा था, वह घटना और उसकी भयावहता उनकी अनुभूति में प्रत्यक्ष हो गई। वहाँ उन्होंने सड़क पर घूमते हुए एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली मानवीय छाया को देखा। विस्फ़ोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फ़ोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उससे अवरुद्ध हो गई होंगी। जो किरणें आस-पास से आगे बढ़ गई होंगी, उन्होंने पत्थर को झुलसा दिया होगा, जो उस व्यक्ति पर अटकीं, उन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। यह सब देख और समझकर सहसा उनके हृदय में उस त्रासदी की अनुभूति प्रत्यक्ष हो उठी कि किस प्रकार सहसा एक जलता हुआ सूरज धरती पर उगा और डूबा होगा तथा उसने किस प्रकार से लोगों और वहाँ की वस्तुओं को जलाकर भाप बनाया होगा। उस सूरज की तपिस उनकी आत्मा तक को झकझोर गई और वे उस अणु-बम विस्फ़ोट के भोक्ता बन गए।

प्रश्न 15 : पाठ के आधार पर बताइए कि एक लेखक के लिए स्वभाव और आत्मानुशासन का क्या महत्त्व होता है?

अथवा **"कृतिकार के स्वभाव और आत्मानुशासन का बहुत महत्त्व होता है।" यह बात लेखक अज्ञेय जी ने किस प्रकार समझाई है?**

उत्तर : एक लेखक के लिए स्वभाव और आत्मानुशासन का अत्यधिक महत्त्व है। कुछ लेखकों का स्वभाव ऐसा होता है कि वे बाहरी दबाव के बिना कुछ लिख ही नहीं पाते। यह दबाव भीतरी विवशता को प्रदर्शित करने के लिए होता है। इस स्थिति में बाहरी दबाव लेखक के लिए सहायक यंत्र के रूप में कार्य करता है। इस संबंध में लेखक का स्वयं के विषय में यह मत है कि उसे लेखन के लिए इस प्रकार के दबाव अथवा सहारे की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 16 : हिरोशिमा की घटना को विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग क्यों कहा गया है? पठित पाठ के आधार पर समझाइए।

उत्तर : हिरोशिमा की घटना को विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग इसलिए कहा गया है; क्योंकि इसने मनुष्य के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया। विज्ञान के अनुसंधान और उनका उपयोग जीवन को सुंदरतम बनाने के लिए किया जाता है, किंतु जब उसका उपयोग मनुष्य के अस्तित्व की समाप्ति के लिए किया जाने लगे तो उसका इससे भयानकतम दुरुपयोग और कोई नहीं हो सकता। हिरोशिमा में विज्ञान का यही भयानकतम दुरुपयोग किया गया, इसमें कोई संदेह नहीं है।

प्रश्न 17 : स्वतंत्रता-पूर्व तथा स्वतंत्रता के पश्चात् विज्ञान के उपयोग के सोच में आए परिवर्तनों के विषय में 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ के आलोक में जानकारी दीजिए। *(CBSE 2017)*

उत्तर : स्वतंत्रता-पूर्व विज्ञान के उपयोग संबंधी सोच उसके सैद्धांतिक पक्ष पर अधिक हुआ करती थी; जैसे—अणु क्या होता है, रेडियोधर्मी तत्त्व क्या होते हैं, उनका दुष्प्रभाव क्या होता है, अणु का भेदन कैसा होता है? मगर स्वतंत्रता के पश्चात विज्ञान के उपयोग संबंधी सोच प्रायोगिक हो गई अर्थात् अणु के भेदन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले ताप का विकास के लिए क्या उपयोग हो सकता है, रेडियोधर्मी तत्त्वों और उसके विकरण का अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसी सोच का परिणाम है कि हमने अणु विखंडन का प्रयोग अपनी ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति के लिए बड़े स्तर पर किया है। आज भारत में अनेक परमाणु रियेक्टरों के द्वारा बड़े स्तर पर विद्युत उत्पादन किया जा रहा है। देश की रक्षा के लिए हमने परमाणु बमों का न केवल निर्माण किया, बल्कि उन्हें शत्रु के ठिकाने तक पहुँचाने के लिए प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण भी किया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश—*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए—*

1. **कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौन-से हो सकते हैं?**
2. **'माता का अँचल' पाठ में बाल-सुलभ भोलेपन और सरलता को कैसे चित्रित किया गया है? दो उदाहरण दीजिए।**
   अथवा **'माता का अँचल' पाठ में आपको बाल स्वभाव की कौन-सी जानकारी मिलती है?**
3. **बच्चे रोना-धोना पीड़ा, आपसी झगड़े ज़्यादा देर तक अपने साथ नहीं रख सकते हैं। 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**
4. **'साना-साना हाथ जोड़ि......' पाठ में गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया है?**
5. **प्राकृतिक सौंदर्य की अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन-से दृश्य झकझोर गए? 'साना-साना हाथ जोड़ि.....' पाठ के आधार पर बताइए।**
   अथवा **नदी, फूलों, वादियों और झरनों के स्वर्गिक सौंदर्य के बीच किन दृश्यों ने लेखिका के हृदय को झकझोर दिया? 'साना-साना हाथ जोड़ि पाठ.....' के आधार पर उत्तर दीजिए।**
6. **प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति हुई?**
7. **लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?**
8. **हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबावों का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?**
9. **मैं क्यों लिखता हूँ? का लेखक ने क्या उत्तर दिया?**
10. **अज्ञेय जी ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंकने और हिरोशिमा के विस्फ़ोट में कौन-सी समानता देखते हैं?**